प्रातः क्लास 3/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं दादा के द्वारा। आज 3 तारीख है। सभी सेन्टर्स के बच्चों को मालूम है बाप का परिचय देने लिए आगरे में दुकान अथवा म्युजियम खुल रहा है। बच्चे जानते हैं उद्घाटन तो बेहद के बाप ने गुप्त रीति से कब से ही कर लिया है। अभी यह शाखाएँ अथवा ब्रान्चेज निकलते हैं। पाठशालाएँ बहुत चाहिए ना। एक तो है मैन पाठशाला जिसमें बाप रहते हैं। इसका नाम रखा है मधुबन। बच्चे जानते हैं मधुबन में सदैव मुरली बजती रहती है। किसकी? भगवान की। अभी भगवान तो है निराकार। मुरली बजाते हैं साकार रथ द्वारा। उनका नाम रखा है भाग्यशाली रथ। यह तो कोई भी समझ सकते हैं इसमें बाप प्रवेश करते हैं। यह तो तुम बच्चे ही समझते हो। और कोई न रचयिता को न रचना के आदि, मध्य, अन्त को जानते हैं। सिर्फ बड़े आदमी हैं, गवर्नर हैं, प्रजीडेन्ट आदि हैं तो उनसे खुलवाते हैं। यह भी हमेशा बाबा लिखते रहते हैं कि जिनसे खुलवाते हो उनको पहले परिचय देना है कि बाप कैसे नई दुनिया स्थापन करते हैं उनकी यह ब्रान्च खुल रही है। कोई न कोई से खुलवाते हैं ताकि उनका भी कल्याण हो। कुछ समझे कि बरोबर बाप आया हुआ है, ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है विश्व में शांति की राज्य की वा आदि सनातन देवी–देवता धर्म की। उनका उद्घाटन तो हो चुका है। अभी यह ब्रान्च खुल रही है। जैसे जिन बैंक्स की ब्रान्चस खुलते जाते हैं ना। बाप को ही आकर नालेज देनी है। यह नालेज उस परमपिता परमात्मा में ही है, इसलिए उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। रूहानी बाप में ही रूहानी ज्ञान है जो रूहों को आकर देते हैं। समझाते हैं हे बच्चों अथवा हे आत्माओं तुम अपन को आत्मा समझो। आत्मा नाम तो कॉमन है। महान आत्मा, पुण्यात्मा, पापात्मा कहा जाता है ना। तो आत्माओं को परमपिता परमात्मा बाप यह समझा रहे हैं। बाप क्यों आवेंगे। जरूर बच्चों को वरसा देने लिए। वरसा कैसे मिलता है वह भी बाप समझाते हैं कि मुझे याद करने से तुम पावन बन जावेंगे। पावन बन अपने घर जाये फिर सतोप्रधान नई दुनिया में आना है। नई दुनिया से पुरानी दुनिया, पुरानी दुनिया से फिर नई दुनिया में जाना जरूर होता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉगराफी रिपीट कहा जाता है ना। नई अथवा पुरानी दुनिया मनुष्यों के ही हैं। बाप समझाते हैं मैं आया हूँ नई मनुष्य सृष्टि रचने। बिगर मनुष्यों की तो दुनिया होती नहीं। नई दुनिया में देवी देवताओं का ही राज्य था। जिसकी फिर से अभी स्थापना हो रही है। अभी तुम बच्चे शूद्र मनुष्य से ब्राह्मण बने हो, फिर तुमको ब्राह्मण से देवता बनाने आया हूँ। तुम यह सुना सकते हो कि बाप ऐसे समझाते हैं तुम नई दुनिया में कैसे जा सकते हो। अभी तो तुम्हारी आत्मा पतित विकारी है। सो अब निर्विकारी बनना है। जन्म–जन्मान्तर के पापों का बोझा सिर पर है। पाप कब से शुरू होते हैं, बाप कितने वर्षों के लिए पुण्यात्मा बनाते हैं यह भी अभी तुम जानते हो। 21 जन्म तुम पुण्यात्मा रहते हो। फिर पापात्मा बने हो। जहाँ पापात्मा रहते हैं वहाँ दुख ही होगा। पाप कौन से हैं वह भी बाप बतलाते हैं। एक तो तुम धर्म की ग्लानी करते हो। कितने तुम पतित बन गये हो। मुझे बुलाते आये हो कि हे पतित पावन..... सो अब मैं आया हूँ। पावन बनाने बाप को तुम गाली देते ग्लानी करते रहते हो। इसलिए तुम पापात्मा बन पड़े हो। कहते भी हो हे प्रभु जन्म जन्मान्तर के पापिन हूँ। आकर पावन बनाओ। तो बाप समझाते हैं कि जिसने सबसे जास्ती जन्म लिये हैं उनके ही बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश करता हूँ। बाबा बहुत जन्म किसको कहते? बच्चे 84 जन्मों को। जो पहले2 आते हैं वही 84 जन्म लेते। यह तो तुम समझते हो पहले तो यह ल0ना0 ही आते हैं। यहाँ तुम आते ही हो नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनने। कथा भी यही सुनाते हैं। कब राम सीता बनने की कथा सुनी। किसने सुनाई है। उनकी तो ग्लानी की हुई है। बाप बनाते ही हैं नर से ना0 बनने, नारी से ल0 जिनकी कब भी कोई निन्दा नहीं करते। बाप कहते हैं मैं तुमको नर से ना0 बनाता हूँ। अथवा राजयोग सिखाता हूँ। विष्णु के दो रूप यह ल0ना0 हैं। छोटेपन में राधे–कृष्ण हैं। यह कोई भाई–बहन नहीं हैं। अलग2 राजाओं के बच्चे थे। वह महाराजकुमार वह

महाराजकुमारी थे जिनको फिर स्वयंवर बाद ल0ना0 कहा जाता है। यह सभी बातें कोई मनुष्य नहीं जानते। जिनको कल्प पहले यह सब बातें बुद्धि में बैठी होगी उनको ही बैठेगी। उन ल0ना0, राधे–कृष्ण आदि सभी के मंदिर हैं। शंकर का भी मंदिर है। विष्णु का भी मंदिर है। जिसको नर–नारायण का मंदिर कहते हैं। और फिर ल0ना0 का अलग2 भी मंदिर है। ब्रह्मा का भी मंदिर है। ब्रह्मा देवतायनमः विष्णु देवतायनमः शंकर देवतायनमः कह देते हैं। फिर कहते हैं शिव परमात्मायनमः। तो वह अलग हो गया ना। देवताओं को कब भगवान थोड़े ही कहा जाता है। यहाँ तो तमोप्रधान मनुष्यों को भी भगवान कह देते। तो बाकी फर्क क्या रहा। इसको कहा जाता है अंधेर नगरी.....टके सेर भाजी टके सेर खाजा। कुत्ते बिल्ले, ठिक्कर–भित्तर सब को कह देते हैं भगवान अभी भगवान कहाँ, ठिक्कर–भित्तर कहाँ। तो बाप समझाते हैं पहले2 जिससे ऑपनिंग करानी है उनको समझाना है विश्व में शान्ति स्थापन अर्थ भगवान ने तो फाउंडेशन लगा दिया है। विश्व में शान्ति इन(ल0ना0) के राज्य में थी ना। यह सतयुग के मालिक हैं ना। तो मनुष्य को नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनाने की यह बड़ी गॉडली युनिवर्सिटी है। अथवा ईश्वरीय विश्व–विद्यालय है। विश्व–विद्यालय तो बहुतों ने नाम रख दिये हैं। वास्तव में वह कोई वर्ल्ड युनिवर्सिटी है नहीं। युनिवर्स तो सारा विश्व ही हो गई। सारे विश्व में बेहद का बाप एक ही कालेज खोलते हैं। तुम बच्चे जानते हो विश्व में सभी पावन बनने के हैं। विश्व–विद्यालय एक ही है जो बाप स्थापन करते हैं। हम सारे विश्व को शान्तिधाम, सुखधाम में ले जाते हैं। इसलिए इनको कहा जाता है ईश्वरीय विश्व–विद्यालय। ईश्वर आकर सारे विश्व को मुक्ति–जीवनमुक्ति का वरसा देते हैं। कहाँ बाप की बात कहाँ यह सभी कहते रहते युनिवर्सिटी। युनिवर्स अथवा सारे विश्व को चेंज करना यह तो बाप का ही काम है। हमको यह नाम रखने नहीं देते और गवर्मेन्ट खुद रखती है। यह तो तुमको समझाना है। वह भी पहले तो नहीं समझावेंगे। बोलो हमारा नाम ही है ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ। इनका ब्रह्मा नाम ही तब पड़ा है जब बाप ने आकर इनको रथ बनाया है। प्रजापिता ब्रह्मा तो मशहुर है ना। वह आया कहाँ से। उनके बाप का क्या नाम है? ब्रह्मा को देवता कहा जाता है ना। देवताओं का बाप तो जरूर परमात्मा रचयिता ही होगा। वह है रचना। ब्रह्मा को कहेंगे पहले2 रचना। उनका बाप है शिवबाबा। वह कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर इनकी भी पहचान तुमको देता हूँ। तो बच्चों को समझाना चाहिए यह है ईश्वरीय म्युजियम। बाप कहते हैं मुझे बुलाया ही है कि आकर पतित से पावन बनाओ। अब हे बच्चों, हे आत्माओं तुम अपने बाप को याद करो तो पतित से पावन बन जावेंगे। मन्मनाभव। यह अक्षर तो गीता के ही हैं। भगवान एक ही पतित पावन ज्ञान का सागर है। कृष्ण तो पतित पावन हो न सके। वह पतित दुनिया में आ न सके। पतित दुनिया में पतित पावन बाप ही आवेंगे। बाप कहते हैं मैं सारी दुनिया को आकर पावन बनाता हूँ। अभी मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म होंगे। कितनी सहज बात है। भगवानुवाच अक्षर जरूर कहना है। परमपिता परमात्मा कहते हैं काम विकार महाशत्रु है। पहले निर्विकारी दुनिया थी। अभी है विकारी दुनिया। दुख ही दुख है। निर्विकारी तो फिर सुख ही सुख होगा। यह पुरानी दुनिया तमोप्रधान दुनिया है। तो यह सब समझानी उनको देनी है। भगवानुवाच काम महाशत्रु है इन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। एक बाप को याद करो। हम भी उनको याद करते हैं। जैसे कोई कॉलेज खुलता है तो उसका भी उद्घाटन कराते हैं ना। यह भी कॉलेज है। ढेर सेन्टर्स हैं। सेन्टर में टीचर स्थापन होते हैं। टीचर को भी यह ख्याल जरूर रखना चाहिए बाप नये2 सेन्टर्स पर अच्छी2 ब्राह्मणियों को रखते हैं। इसलिए जल्दी2 आप समान बनाकर फिर और2 सेन्टर्स पर भागना चाहिए सर्विस को उठाने। देखेंगे कौन2 ठीक रीति मुरली पढ़कर सुना सकते हैं। समझा सकते हैं तो उनको कहेंगे अभी तुम यहाँ बैठ क्लास कराओ। ऐसे ट्रायल कराये उनको बिठाये खुद चला जाना चाहिए और जगह सेन्टर जमाने; परन्तु होता क्या है ब्राह्मणियों को एक जगह ही सुख मिल जाता है। आराम से बैठी रहती हैं तो समझते हैं कौन बैठ माथा मारे। नहीं तो ब्राह्मणियों का काम है सेन्टर जमाये दूसरे पर जाना; परन्तु आराम पसन्द आता है।

थोड़ा न मिलता है तो बस। नहीं तो ब्राह्मणी को 10/20 जगह सेन्टर स्थापन करनी चाहिए। बहुत सर्विस करनी चाहिए। दुकान खोलते जायें, आप समान बनाकर कोई को छोड़ते जायें। दिल में आना चाहिए कोई को आप समान बनाये तैयार करूँ तो और सेन्टर्स खुले; परन्तु ऐसे आज्ञाकारी कोई बिरले ही होते हैं। आज्ञाकारी इसको कहा जाता है सेन्टर खोला और आप समान बनाया। आप समान न बनाते हैं तो गोया भैंस बुद्धि ठहरे। अच्छा किसको समझा नहीं सकते हो और काम करो। इसमें दिल हटाना नहीं चाहिए। देह अभिमान आना न चाहिए। मैं तो बड़े घर की हूँ मैं यह काम कैसे करूँ। हमको दर्द होगा। थोड़ा भी काम करने से हड देखेंगे। उनको देहाभिमान कहा जाता है। कुछ भी समझते नहीं। औरों की सर्विस करनी चाहिए ना। जो फिर वह भी लिखें कि बाबा फलाने ने हमको समझाया। हमारी जीवन बना दी। सर्विस का सबूत कितना चाहिए। एक–एक को टीचर बनना है। आपे ही लिखें बाबा हमारे पिछाड़ी ढेर सम्भालने वाले हैं। हमने बहुत आप समान बनाई है। हम सेन्टर खोलते जावें। ऐसे बच्चे को कहेंगे फूल। सर्विस ही नहीं करेंगे तो फूल कैसे बनेंगे। फूलों की भी बगीचा है ना। तो उद्घाटन करने वाले को समझाना चाहिए हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ, शूद्र से ब्राह्मण बन फिर ब्राह्मण से देवता बनते हैं। बाप इस ब्राह्मण कुल, सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी कुल की स्थापना करते हैं। इस समय तो सभी शूद्र वर्ण के हैं। सतयुग में देवता वर्ण के थे। क्षत्री फिर वैश्य वर्ण के फिर शूद्र वर्ण के बने। सिवाय ब्राह्मण बनने देवता वर्ण में जा नहीं सकते। पता नहीं उनको यह बातें समझाई हैं वा नहीं। यह वर्ण ऐसे फिरते हैं। बाबा जानते हैं कितने प्वाइंट्स बच्चे भूल जाते हैं। पहले2 है ब्राह्मण वर्ण। प्रजापिता ब्रह्मा के औलाद ब्राह्मण है ना। फिर देवता वर्ण क्षत्री..... इस समय सभी शूद्र ही शूद्र हैं। ब्राह्मण वर्ण के लिए जरूर ब्रह्मा चाहिए। ब्रह्मा कहाँ से आवे। यह ब्रह्मा बैठा है ना। अच्छी रीत समझान चाहिए। ब्राह्मण ही सो फिर देवता बनते हैं। यह ब्रह्मा भी देवता बनने वाले हैं। इसमें बाप प्रवेश कर नालेज देते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? ब्राह्मणों की। फिर उन्हों को शिक्षा दे देवता बनाते हैं। हम बाप से पढ़ रहे हैं। भगवानुवाचः इन्होंने तो लिख दिया है अर्जुन प्रति। अभी अर्जुन कौन था किसको पता थोड़े ही है। वर्णों का राज़ भी समझाना है। तुम यहाँ बैठे हो। जानते हो हम ब्राह्मण वर्ण के हैं। ब्रह्मा के औलाद हैं। अगर कोई कहते हम तो शिवबाबा के बच्चे हैं, ब्रह्मा से हमारा कनेक्शन नहीं तो फिर देवता बनेंगे कैसे। ब्रह्मा के द्वारा ही बनेंगे ना। शिवबाबा कैसे किस द्वारा कहा कि मुझे याद करो। ब्रह्मा द्वारा कहा ना। प्रजापिता ब्रह्मा के तो बच्चे हो ना। ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ कहलाते हो। हम ब्रह्मा के बच्चे हैं तो जरूर ब्रह्मा याद आवेगा। शिवबाबा ब्रह्मा तन से पढ़ाते हैं। ब्रह्मा भी बाबा है बीच में। ब्राह्मण बनने बिगर देवता बन कैसे सकेंगे। मैं जिस रथ में आता हूँ उनको भी जानना चाहिए। शूद्र कुमार–कुमारियाँ तो मुझे याद कर न सकें। जब तक ब्रह्मा को बाप न बनाया है। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको ब्राह्मण बनाकर फिर देवता बनाते हैं। यह बुद्धि में आना चाहिए। ब्राह्मण बनना चाहिए। ब्रह्मा को बाबा न कहें तो बच्चा ही कैसे ठहरा। ब्राह्मण अपने को नहीं समझते तो गोया शूद्र हैं। शूद्र से फिर देवता बने बड़ा मुश्किल है। ब्राह्मण बन शिवबाबा को याद करने बिगर देवता बन कैसे सकेंगे। इसमें मुँझने की भी दरकार नहीं रहती। तो उद्घाटन करने वाले को भी समझाना है कि बाप द्वारा उद्घाटन तो हो चुका है, अभी तुमसे इस ब्रान्च की उद्घाटन कराते हैं तो तुम्हारा भी कल्याण हो जाये। बड़े आदमी कहेंगे तो उनका कहना सभी मानेंगे। आपको भी बताते हैं कि सिर्फ बाप को याद करो तो पाप कट जाये। वह बाप ही पतित–पावन है। फिर तुम पावन बन देवता बन जावेंगे। बच्चे बहुत सर्विस कर सकते हैं। मंदिर ठिकाणे आदि में भी पैगाम पहुँचाना है। बेहद के बाप ने कहा है अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। मैं ही सर्व का सद्गति दाता हूँ। मेरे को याद करने से तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह पैगाम तुम किसको भी दे सकते हो। जास्ती बकवाद नहीं करनी है सिर्फ पैगाम देना है। बोलो हम बाप का पैगाम देते हैं। अब करो न करो तुम्हारी मर्जी। हम पैगाम देकर जाते हैं। और कोई भी रीति कल्याण होना ही नहीं है। जब फुर्सत मिले सर्विस करो। समय तो बहुत मिलता है। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।